भारत सरकार

संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 1359

उत्तर देने की तारीख 08.12.2025

'ज्ञान भारतम' पहल

1359. श्री बिप्लब कुमार देब :
श्री प्रताप चंद्र षडङ्गी :
श्री बंटी विवेक साहू :
श्री सौमित्र खान :

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) भारत की पांडुलिपि धरोहर को संरक्षित, डिजिटलाइज और प्रसारित करने के लिए सरकार द्वारा शुरू की गई "ज्ञान भारतम" राष्ट्रीय पहल का ब्यौरा और इसके उद्देश्य क्या हैं;

(ख) क्या इस मिशन के अंतर्गत पांडुलिपियों के सूचीकरण, संरक्षण, डिजिटलाइजेशन और जनता के लिए पहुँच सुनिश्चित करने हेतु कोई तकनीकी और संस्थागत उपाय किए जा रहे हैं;

(ग) यदि हाँ, तो कार्यान्वयन की स्थिति, सहभागी संस्थान और अब तक डिजिटलाइज की गई पांडुलिपियों की संख्या तथा क्षेत्रीय सहयोग सहित तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(घ) दिल्ली घोषणा (ज्ञान भारतम संकल्प पत्र) में वर्णित प्रमुख विशेषताएँ, प्रतिबद्धताएँ और लक्ष्य क्या हैं और यह किस प्रकार भारत की पांडुलिपि धरोहर के संरक्षण, पुनर्जीवन और वैश्विक प्रचार में बदलाव लाने का प्रयास करता है,

(ङ) क्या मध्य प्रदेश, विशेषकर छिंदवाड़ा के संग्रहालय, विश्वविद्यालय या अनुसंधान संस्थान इस पहल के अंतर्गत शामिल किए गए हैं, यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(च) ओडिसी नृत्य, ओडिसी संगीत और संबलपुरी नृत्य के संरक्षण और प्रसार हेतु उठाए गए/ उठाए जा रहे कदमों का ब्यौरा प्रदान करें?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री

(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क): केन्द्रीय बजट (पैरा 84) में 1 फरवरी, 2025 को घोषित ज्ञान भारतम, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की महत्वपूर्ण पहल है जिसका उद्देश्य भारत की पांडुलिपि धरोहर का सर्वेक्षण, प्रलेखन, संरक्षण, डिजिटलीकरण और प्रसार करना है। इस पहल में उन्नत प्रौद्योगिकी और कृत्रिम मेधा (एआई) द्वारा समर्थित राष्ट्रीय डिजिटल संग्रह स्थापित करते हुए, एक करोड़ से अधिक पांडुलिपियों को सम्मिलित करने हेतु शैक्षणिक संस्थाओं, संग्रहालयों, पुस्तकालयों और निजी संग्रहकर्ताओं के साथ सहकार्य करने की परिकल्पना की

गई है ताकि सुलभता और वैश्विक पहुंच सुनिश्चित की जा सके। इस पहल में सहायता प्रदान करने हेतु स्थायी वित्त समिति (एसएफसी) ने 2025-3031 की अवधि के लिए 491.66 करोड़ रुपए संस्वीकृत किए हैं।

(ख) और (ग): भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा ज्ञान भारतम डिजिटल वेब पोर्टल का शुभारंभ किया गया। 31 संस्थाओं के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए हैं जिनमें से 19 क्लस्टर केन्द्रों और 12 स्वतंत्र केन्द्रों के रूप में सेवा प्रदान करेंगे और ज्ञान भारतम के पांच कार्यक्षेत्रों सर्वेक्षण और सूचीकरण; संरक्षण और क्षमता निर्माण; प्रौद्योगिकी और डिजिटलीकरण; भाषाई पक्ष और अनुवाद; शोध, प्रकाशन और पहुंच संबंधी कार्य करेंगे। देश भर में क्लस्टर केंद्रों और स्वतंत्र केंद्रों को सहायता प्रदान करने के लिए प्रौद्योगिकी भागीदारों का चयन कर लिया गया है। ज्ञान भारतम पहल के तहत लगभग 3.5 लाख पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण किया जा चुका है।

(घ): दिल्ली घोषणा पत्र (ज्ञान भारतम संकल्प पत्र) में संस्थाओं, विद्वानों, समुदायों और निजी अभिरक्षकों को एकीकृत करते हुए भारत की विस्तृत पांडुलिपि धरोहर को परिरक्षित, डिजिटलीकृत और पुन: सुदृढ़ करने के लिए राष्ट्रीय प्रतिबद्धता निर्धारित की गई है। भारत की सभ्यता की जीवंत स्मृति के रूप में पांडुलिपियों की भूमिका पर बल देते हुए, इसमें आधुनिक संरक्षण पद्धतियों, बड़े पैमाने पर डिजिटल पहुंच और नवीकृत शोध को प्रोत्साहित किया गया है ताकि पारंपरिक ज्ञान को समकालीन प्रासंगिकता से जोड़ा जा सके। धरोहर परिरक्षण को जन आंदोलन में परिवर्तित करते हुए और वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देते हुए, यह घोषणा पत्र पांडुलिपि आधारित अध्ययन हेतु भारत को वैश्विक केन्द्र के रूप में स्थापित करते हुए, विविध लिपियों और ज्ञान परंपराओं की संरक्षा में परिवर्तनकारी भूमिका निभाता है।

(ड.): ज्ञान भारतम एक अखिल भारतीय पहल है और इसलिए इसका कार्यक्षेत्र देश के किसी विशिष्ट राज्य क्षेत्र या क्षेत्र तक सीमित नहीं है। तदनुसार, ज्ञान भारतम पहल के अंतर्गत डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

(च): संस्कृति मंत्रालय के नियंत्रणाधीन स्वायत्त संगठन, संगीत नाटक अकादेमी द्वारा ओडिसी नृत्य, ओडिसी संगीत और संबलपुरी नृत्य सहित भारत की शास्त्रीय, पारंपरिक, जनजातीय और लोक मंच कलाओं को संवर्धित और परिरक्षित करने हेतु महोत्सव, कार्यशालाएं, प्रदर्शनियां और अन्य कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। यह संगीत महोत्सवों, संगोष्ठियों और कार्यशालाओं का आयोजन भी करती है तथा ओडिसी नृत्य और ओडिसी संगीत के कलाकारों को संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार और उस्ताद बिस्मिल्लाह खान युवा पुरस्कार जैसे राष्ट्रीय सम्मान भी प्रदान करती है।

संस्कृति मंत्रालय के नियंत्रणाधीन स्वायत्त संगठन, पूर्वी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (ईजेडसीसी), कोलकाता ओडिशा सहित अपने सदस्य राज्यों की लोक कलाओं को बढ़ावा देता है और सांस्कृतिक कार्यक्रमों और महोत्सवों के माध्यम से संबलपुरी नृत्य (एक जीवंत लोक नृत्य शैली) को नियमित रूप से प्रस्तुत करता है।

*****